हुमायूँ के शासनकाल में शिक्षा : एक अध्ययन

प्रीति सिंह

शिक्षा के बिना मानव जीवन अधूरा रहता है। और किसी न किसी तरह से उसे दूसरों का सहारा लेना पड़ता है। शिक्षा उच्च जीवन का आधार होती है। मुगलकाल में शिक्षा की व्यवस्था सल्तनत काल की अपेक्षा अधिक थी। बाबर स्वयं एक विद्वान और कवि था। उसकी आत्मकथा श्बाबरनामाश एक अद्वितीय ग्रन्थ है, लेकिन अपने अल्प शासन काल में शिक्षा प्रसार के लिए वह कुछ नहीं कर सका। उसके वजीर मकबर अली ने लिखा है कि मकतबों और मदरसों का निर्माण कार्य श्सुहरते आमश द्वारा किया जाता था। बाबर के दरबार में बहुत से विद्वान थे, जिनमें स्वान्दमीर और शेख जैन ख्वाफी प्रमुख थे।

हुमाँयू ने दिल्ली में एक बड़ा मदरसा बनवाया और शेख हुसैन को उसका प्रचारक नियुक्त किया। उसने दिल्ली में एक ग्रन्थालय की स्थापना करायी तथा शेरशाह के आराम ग्रह को ग्रन्थालय में परिवर्तित कर दिया। हुमाँयू के मकबरे में भी एक मदरसा खोला गया वह स्वयं भूगोल, गणित व ज्योतिष में रूचि रखता था। शेरशाह ने नरनौल में एक मदरसा खोला उसमें सभी लोग शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। सल्तनत काल के बाद जब मुगल शासकों ने भारत में अपनी सत्ता स्थापित की, तब शिक्षा एक नये रूप में विकसित हुई। मुगल काल तक भारतीय संस्कृति और इस्लामी संस्कृति के समन्वय का प्रभाव ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र, धर्मशास्त्र, साहित्य अध्यात्म, ललित कला, चित्रकला, वास्तुकला, गणित, चिकित्सा, ज्योतिष शास्त्र और खगोल शास्त्र पर भी हुआ। मुस्लिम शासकों द्वारा स्थापित नयी शिक्षा प्रणाली के फलस्वरूप प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। बाबर, ने अपने प्रिय पुत्र हुमायूँ की शिक्षा और उसे योग्य बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया था। समरकन्द हाथ से निकल जाने के बाद जब काबूल में बाबर का जीवन स्थायी हो गया, तब हुमायूँ का शैशवकाल था। बाबर ने यहाँ हुमायूँ की शिक्षा–दीक्षा का समुचित प्रबन्ध किया और उसके लिए योग्य अध्यापकों को नियुक्त कर दिया।

हुमायूँ के शिक्षकों में ख्वाजा किलान और शेख जैनुद्दीन प्रमुख थे जिनसे उसने प्रारम्भिक शिक्षा ग्रण की थी। महिउद्दीन रूहुल्ला और मौलाना इलियास भी उसके अध्यापक थे। बाबर यह चाहता था कि हुमायूँ में अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत हो, इसीलिए उसने मिलवत पर अधिकार करने के बाद गाजी खां के पुस्तकालय की कुछ अच्छी पुस्तकें हुमायूँ के पास भेजी थी। बाबर भाषा की शुद्धता का इतना ध्यान रखता था कि जब उसे हुमायूँ के पत्र में त्रुटियाँ दिखाई दीं तो उसने हुमायूँ को इस सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश दिए थे। बाबर ने हुमायूँ को यह भी परामर्श दिया था कि स्वाभाविक रूप से लिखो, साफ–साफ लिखो और सीधे–सादे शब्दों में लिखो।

हुमायूँ तुर्की, अरबी और फारसी भाषा अच्छी तरह से पढ़ और लिख सकता था। भूगोल, गणित, ज्योतिष और दर्शनशास्त्र में उसकी रूचि थी और उसका ज्ञान प्राप्त किया था। इतिहास, धर्म, साहित्य और काव्य का उसने बहुत अध्ययन किया था तथा मंत्र और शकुन की ओर भी उसका झुकाव था। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उसको प्रारम्भिक शिक्षा अच्छी हुई होगी। उसने अपने पिता से गद्य लिखने की शिक्षा प्राप्त की थी तथा उसमें काव्य प्रतिभा भी थी। अबुल फजल लिखता है कि उसे कविता तथा कवियों में रूचि थी। उसमें कविता करने को बड़ी योग्यता थी। समय समय पर वह आध्यात्मिक तथा सांसारिक विषयों पर कविताएँ किया करता था। उसका दीवान अकबर ने पुस्तकालय में था। यह दीवान आज भी उपलब्ध है। ज्योतिष और नक्षत्रशास्त्र में तो वह प्रवीण था। विभागों का विभाजन, बाणों के बारह वर्ग, नक्षत्रों के रंगों के अनुसार दैनिक वेशभूषा, अपने खेमे के बारह भाग आदि से बचने के लिए किए थे। उसने नक्षत्र मापक यंत्र बनवाया जिसे "अस्त्रोलामे हुमायूँ" कहते हैं। हुमायूँ ने मौलाना इलियास की सहायता से एक वेधशाला भी स्थापित करने का प्रयास किया था। अबुलफजल के अनुसार हुमायूँ एक वेधशाला का निर्माण करना चाहता था। इसके लिए उसने बहुत से यंत्रों की व्यवस्था भी कर ली थी तथा कई स्थानों को वेधशाला

✶ **शोधार्थी, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया**

के लिए चुना भी था। हुमायूँ न केवल एक वैज्ञानिक था वरन् उच्च कोटि का विद्वान भी था। अपने पिता की भांति उसमें भी शासकीय योग्यता से अधिक साहित्यिक प्रतिभा थी। बचपन से ही उसे पुस्तकों से बड़ा लगाव हो गया था और अंत समय तक बना रहा। उसकी मृत्यु भी पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर हुई थी। वह यात्रा में भी पुस्तकें अपने साथ में रखता था। उसके व्यक्तिगत सेवक जौहर से जानकारी मिलती है कि एक बार जब खोई हुई पुस्तकें पुनः प्राप्त हो गई तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई थी और उसने कहा था कि ईश्वर को धन्यवाद है, क्योंकि जो खजाना (पुस्तकों का भण्डार) फिर से संचित नहीं हो सकता था वह सुरक्षित है। अन्य वस्तुएँ तो आसानी से प्राप्त की जा सकती है। हुमायूँ को विद्वानों से बड़ा स्नेह था और वह ऐसे व्यक्तियों को साथ रखना पसन्द करता था और सम्राट चाहता था कि वह निरन्तर उसके साथ रहे। उसने दरबार में विद्वानों का बड़ा सम्मान दिया था। शाही परिवार के सदस्यों के बाद विद्वानों को दरबार में उच्च स्थान प्राप्त था। विद्वानों से मिलना तथा उनसे वार्ता करना हुमायूँ को बहुत अच्छा लगता था। बृहस्पतिवार एवं शनिवार को वह अपने महल में विद्वानों से भेंट करता था तथा वैज्ञानिक और साहित्यक चर्चा में समय व्यतीत करता था। फरिश्ता के अनुसार उसने सात बड़े कमरों का निर्माण प्रशासन के अधिकारियों के स्वागत के लिए किया था। उनमें से एक हॉल विद्वानों के स्वागत के लिये निर्धारित था। हुमायूँ ने विद्वानों का प्रमुख दरबारियों में सम्मिलित किया था और यह लोग नियमित रूप से दरबार में उपस्थित होते थे। इस प्रकार हुमायूँ के शासनकाल में विद्वानों और साहित्यकारों को अतिशय सम्मान और उच्च स्थान प्राप्त था, तथा सम्राट सदैव उनकी सुविधा तथा प्रसन्नता का ध्यान रखता था।

हुमायूँ केवल विद्वान, कवि, और विद्यानुरागी ही नहीं था वरन् कवियों तथा विद्वानों का पोषक तथा संरक्षक भी था। उसकी रूचि तथा प्रोत्साहन से प्रभावित होकर ईरान, तुर्कीस्तान, बुखारा तथा समरकन्द से कवि और विद्वान अपना देश छोड़कर उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। बुखार के जाही मजमान तथा मावराउन्नहर के हेराती काबुल में ही उसके दरबार में आ गए थे। मौलाना अब्दुल बार्की सतुर्कीस्तानी, मीर अब्दुल हई बुखारी, ख्वाजा जिरी जामी, मौलाना बज्मी, मुल्ला मुहम्मद सालीह तथा मुल्ला जान मुहम्मद उसके दूसरे भारतीय अभियान में उसके साथ आये। मीर अब्दुल लतीफ कजबी ने मौलाना इलियास, मौलाना अब्दुल कासिम अस्तराबादी, ख्वाजा अयुब शेख अबुल शाहिद फारिंगी शिरात्री तथा शौकी तबरीजी ईरान के मकवी दरबार तथा वहाँ के नगरों से आये थे। सीदी अली रेईस हुमायूँ के कविता प्रेम की प्रशंसा करता है। वह लिखता है कि हुमायूँ का शाही तीरंदाज भी इन कवि गोष्ठियों में भाग लेता था। शेख अमानुल्ला पानीपती हुमायूँ का प्रमुख कवि था। वह सूफी तथा धर्मशास्त्री भी था। इसने हुमायूँ की प्रशंसा में अनेक कसीदों की रचना की। उसकी कविताएँ मधुरता, दर्द तथा सरलता के लिए प्रसिद्ध थी। मौलाना कासिम शाही विद्वान तथा कवि था। हुमायूँ की प्रशंसा में उसने भी कसीदे, मसनवी तथा गजलों की रचना की। हुमायूँ तथा कामरान की मृत्यु पर उसने बड़े ही सुन्दर तिथिबन्धों की रचना की। मौलाना जूनूनी बादख्शा का प्रसिद्ध कवि था। हुमायूँ की प्रशंसा में उसने 38 शेरों के एक सुन्दर कसीदे की रचना की। शेख खाफी "बफाई" के उपनाम से कविता करता था। वह बाबर का सद्र रह चुका था। इसने आगरा में यमुना के पार एक मस्जिद तथा एक मदरसा बनवाया था। यह आशुकवि था। इसकी मृत्यु 1533–34 ई० में चुनार के निकट हुई और वह अपने ही बनवाये मदरसे में दफनाया गया। बफाई का मित्र शेख अबुल वाहिद फारिगी अपनी मीठी वाणी के लिए प्रसिद्ध था। उसकी मृत्यु भी 1533–34 में हुई। अन्य प्रमुख कवियों में ख्वाजा अयूब, शाह ताहिर हैदर तुनियाई, जाहीयतमान तथा मौलाना नादिरी समरकन्दी प्रमुख हैं।

फरिश्ता लिखता है कि हुमायूँ ने एक ऐसा ग्लोब तैयार कराया था जिस पर पंचभूत एवं आकाश का वर्गीकरण अंकित था तथा उसे भिन्न–भिन्न रंगों में रंगा गया था। उसके दरबार में नक्षत्रशास्त्र के भी कई विद्वान थे। इन विद्वानों में शाह ताहिर दक्खिनी, मौलाना इलियास उल्लेखनीय है। मौलाना इलियास ने हुमायूँ को नक्षत्रशास्त्र की शिक्षा वह अपने विषय का ज्ञात था तथा वेधशाला स्थापित करने का भी विशेषज्ञ था। इतिहासकार वायजीद, जौहर तथा ख्वन्दगीर उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। मौलाना मुहम्मद ने "जवाहिरूल उलूम" (विज्ञानों का मणि) की रचना फारसी भाषा में इसी समय में की। यह हुमायूँ के समय का सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। उस समय में इस तरह के विश्व कोष की रचना करना बड़े साहस का काम था।

इतिहासकार लेनपूल लिखता है कि हुमायूँ का अर्थ है "भगवान" किन्तु वह नितांत अभागा था। वह स्वयं एक सुशिक्षित विद्वान सुसंस्कृत विद्वानों का संरक्षक था, किन्तु उसे शिक्षा के प्रसार हेतु ध्यान देने का अवसर ही नहीं मिला। उसका अधिकांश समय अपने बन्धु–बान्धवों और शत्रुओं से संघर्ष करने में ही व्यतीत हो गया और अंततोगत्वा उसे कुछ वर्षों के लिए अपने साम्राज्य से भी हाथ धोना पड़ा। आइन–ए–अकबरी से उसके द्वारा दिल्ली में स्थापित एक मदरसे की जानकारी मिलती है। इस मदरसे में अन्य विषयों के साथ गणित और ज्योतिषशास्त्र की शिक्षा की भी समुचित व्यवस्था थी। इस मदरसे में योग्य व्यक्ति प्राध्यापक का कार्य करते थे, जिनमें शेख हुसैन सर्वाधिक सम्मानित प्रोफेसर था।

मुगल सम्राटों का शिक्षा के प्रति लगाव और उनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए प्रयासों के परिणामस्वरूप मुगलकाल में भारत के प्रत्येक भाग में ज्ञान–विज्ञान का तीव्रगति से प्रसार हुआ। मुगल सम्राटों का अनुसरण अन्य सामंतों और सूबेदारों ने किया। यद्यपि उच्च वर्ग के सम्पन्न लोगों का शिक्षा के प्रति लगाव एवं रूचि में निरन्तरता की कमी थी, फिर भी खुशामद प्रिय होने से उन्होंने साहित्यकारों तथा विद्वानों को संरक्षण दिया। सर अब्दुल कादिर के अनुसार मुगल सम्राटों की शिक्षा के प्रति रूचि देखकर समाज के अन्य वर्गों में भी शिक्षा के प्रति चेतना उत्पन्न हुई। विशेषकर दरबारियों ने सम्राटों के कार्यों और उनकी शिक्षा विषयक नीतियों का अनुगमन किया। अब्दुल अजीज ने "हिस्ट्री ऑफ दि रेन ऑफ शाहजहा" नामक ग्रन्थ में लिखा है कि मुगलकाल के दरबारियों ने शिक्षण संस्थाएँ स्थापित की, जिनसे निम्न वर्ग के लोगों में नैतिक, कलात्मक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विस्तार हुआ। मुगलकाल के सम्राटों ने शिक्षा के उन्नयन एवं प्रगति में जो उल्लेखनीय कार्य किया उसकी पुष्टि उक्त दो विद्वानों के वर्णनों से हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा के विकास एवं प्रगति में मुगल सम्राट और मुगल दरबारी दोनों ही समान रूप से सम्मान के पात्र हैं।

हुमायूँ के शासनकाल में शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तिगत प्रयासों का यहाँ उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। शेख जैनुद्दीन हाफी काव्य एवं लेखन में एक उच्च कोटि का विद्वान था तथा साहित्य, शिक्षा और भाषा शिक्षण में भी उसने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया था। इसने शिक्षा के प्रसार के लिए दिल्ली में एक कॉलेज की स्थापना की

थी। इसी में सेवाएँ देते हुए मरणोपरान्त उसे वहाँ दफनाया गया था। उसकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए आगरा अतिरिक्त हुमायूँ का मकबरा भी शिक्षा का केन्द्र फैसो नामक लेखक लिखता है कि गुम्बज के नीचले हिस्से में काफी संख्या में कमरे तथा बरामदे थे जिन्हें एक समय मदरसे ने अधिग्रहीत कर रखा था. जो मस्जिद से जुड़ा हुआ था और जो हमें सेटपीटर्स डोम की बस्ती का स्मरण करता है। हुमायूँ को अपने पिता से जो पुस्तकालय मिला था, उसे उसने और अधिक समृद्ध और व्यवस्थित बनाया। उसने पुस्तकालय में बड़ी संख्या में पुस्तकों का संग्रह किया। मुल्ला सूर्ख उसका पुस्तकालयाध्यक्ष था, किन्तु जब मुल्ला सूखं जोधपुर के महाराजा मालदेव की सेवा में चला गया तो लाला वेग जो बाजबहादुर के नाम से भी जाना जाता था, ग्रन्थालयाध्यक्ष बनाया गया। निजामी भी कुछ समय के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष रहा था।

हुमायूँ विद्याव्यसनी और वैज्ञानिक था। यद्यपि उसका अधिकांश समय अपने शत्रुओं से संघर्ष करने में एवं राज्य पुनः प्राप्त करने में चला गया था, फिर भी उसने अरूययन को बराबर बनाए रखा। अबुलफजल लिखता है कि ये (पुस्तकें) उसकी आध्यात्मिक साथी थी। "तजकिरात–उल–वाकियात" के लेखक जौहर जो कि हुमायूँ का सेवक था, के अनुसार हुमायूँ पुस्तकों को सच्चा साथी समझता था और अध्क्षियानों के समय भी रूचिकर पुस्तकों को वह अपने साथ रखता था। "अकबरनामा" से ज्ञात होता है कि गुजरात अभियान के समय जब वह काम्बे में था, तब जंगली जाति ने उसके पड़ाव पर आक्रमण कर दिया। लटपाट में हुमायूँ की वे पुस्तकें भी चली गई जिसे वह अपने साथ रखता था। इन पुस्तकों को वह तिमूरनामा भी था, जिसकी प्रति मुल्ला सुलतान अली ने तैयार की थी।

हुमायूँ को पुस्तकें पढ़ने में बड़ा सुख मिलता था तथा विद्वानों से विचार–विमर्श में उसे आनन्दानुभूति होती थी। वैज्ञानिक खोज तथा शोध करने के लिए उसने अपने दरबार में कई विद्वानों को रखा। उसने तुर्की के सिद्दी अली रेईस को भूगोल से सम्बन्धित शोध के लिए अपने दरबार में नियुक्त किया था। इसे अन्य भौगोलिक समस्याओं के अध्ययन के साथ सूर्य और चन्द्र ग्रहण की

गणना का कार्य भी दिया गया था। गुलबदन बेगम के हुमायूँनामा से जानकारी मिलती है कि द्वितीय कमरे में जो अच्छे भाग्य का घर कहलाता है, सभा भवन आयोजित किया गया। जहाँ पुस्तकें, स्वर्ण का मुलम्मा चढ़े कलमदान तथा शानदार खुले पत्र और मनोरंजक चित्रमय पुस्तकें रखी गई। ''मीरात–ए–सिकन्दरी'' का लेखक लिखता है कि पुस्तकें बराबर हुमायूँ के साथ रहती थी तथा लेखक को उसको सेवा में उपस्थित रह कर पुस्तकें पढ़ना पड़ता था। काउण्ट नोइर से मालूम होता है कि भारत को छोड़ते समय वह अपनी मनपसन्द पुस्तकों को भी ले गया था और लाला बेग, जो बाजवहादुर के नाम से भी जाना जाता है, उसका स्वामिभक्त ग्रन्थालयाध्यक्ष भी उसके साथ था। भारत में पुनः अपने राज्य पर अधिकार करने के पश्चात् हुमायूँ ने अध्ययन और शोध के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए दिल्ली के पुराने किले में शेरशाह के विनोदगृह को पुस्तकालय में परिवर्तित कर दिया। उसके इस पुस्तकालय के सम्बन्ध में समकालीन इतिहासकारों से कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती है। अतः यह कहना बड़ा कठिन है कि इस पुस्तकालय में कितनी पुस्तकें थी और किन–किन विषयों की थी।

हुमायूँ की रूचि को ध्यान में रखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसमें साहित्य, कविता, नक्षत्रशास्त्र, खगोलशास्त्र, इतिहास, भूगोल, गणित आदि विषयों की पुस्तकों का संग्रह किया गया होगा। किन्तु दुर्भाग्यशाली हुमायूँ इस पुस्तकालय का अधिक लाभ नहीं उठा सका। जब वह संध्या को अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था, तब उसने मिस्कीक नामक मुकरी के अजान की आवाज सुनी। हुमायूँ का यह नियम था कि जब कभी वह ऐसी आजान सुनता था, तब वह बैठकर प्रार्थना करता था। उस दिन भी उसने वैसा ही किया। उठने के बाद सहारे के लिए जो लकड़ी वह लिए हुए था, वह लकड़ी सीढ़ी के किनारे से फिसल गई। वह सिर के बल नीचे आ गिरा और मूर्छित हो गया। अधिक उपचार करने के बाद भी कोई लाभ नहीं हुआ और 26 जनवरी 1556 को हुमायूँ का प्राणांत हो गया। इस प्रकार लेन्यूल का यह कथन है कि हुमायूँ जन्म भर ठोकरें खाता रहा और ठोकर खाकर ही मरा, सत्य सिद्ध हुआ।

संदर्भ :

1. डॉ. ए .एल. श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 99.
2. डॉ. एस.एस. अत्तेकर, एजुकेशन न एनसिएण्ट इण्डिया, पृ. 301.
3. पी. एल. रावत, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ. 109.
4. डॉ. बी.के. सहाय, एजुकेशन एण्ड लर्निंग अण्डर दि ग्रेट मुगल्स, पृ. 48.
5. चन्द्रबली पाण्डे, मुगल बादशाहों की हिन्दी, पृ. 44.
6. डॉ. पी.एन. चौपड़ा, सोसायटी एण्ड कल्चर इन मुगल एज, पृ. 132.
7. आ. आर. बी. तुजुक–ए–जहाँगिरी, भाग 1, पृ. 357.
8. डॉ. आई.पी. प्रसाद, दि लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ हुमायूँ, पृ. 369.
9. अ. एच.एस. श्रीवास्तव, मुगल सम्राट हुमायूँ, पृ. 10.